भोटिया

भोटिया किरात वंशीय एक अर्द्धघुमंत जनजाति है
ये स्वयं को खस राजपूत कहते है
गारब्या, तोल्छा, जोहारी, शौका, दरमिया, चौंदासी, ब्यासी, जाड, जेठरा व छापड़ा (बखरिया) आदि उपजातिया
मध्य हिमालय की सर्वाधिक जनसंख्या वाली जनजाति
इनका आवास (मैत) और शीतकालीन आवास 'गुण्डा' या 'मुनसा'
परिधान : पुरुष – रंगा, गैजू, खगचसी (ऊनी पैजामा) चुगठी या चुकाल (टोपी) व बांखे (ऊनी जूता)
महिला : च्यूमाला, च्यूंकला, च्युब्ती, ब्यूज्य
आभूषण : स्त्रियाँ – लक्षेप (अंगूठी), बीरावली (सिर आभूषण), छांकरी वाली (सिर आभूषण), बलडंग (चांदी के सिक्को की माला), खोगली (हंसुली) बेसर, मूंगे की माला आदि आभूषण (साली-पुली) धारण करती है।
शराब – च्यकती या छंग

पितृसत्तात्मक समाज (मवासा) व संपत्ति का विभाजन पिता के जीवित रहते हो जाता है।
इनमे युवा गृहों (रंग बंग) का प्रचलन था
भोटिया समाज मे विवाह (दामी) की दो प्रथाएँ (तत्सत व दामोला) देखने को मिलती है
सगाई की रस्म → थौची
विवाह के [redacted] अवसर पर हाथो में रुमाल लेकर 'पौणा नृत्य' होता
भाबज-देवर विवाह, गन्धर्व विवाह व पुनर्विवाह
धर्म : उत्तरकाशी के भोटिया बौद्ध धर्म का अनुयायी है
भूम्याल, ग्वाला, रैग रैग, पिम, नंदादेवी, दुर्गा, कैलाशपर्वत, दोणागिरी, हाथी पर्वत आदि देवी-देवताओं की पूजा करते है

इनके पशुरक्षक देवता – घटाकर्ण, सिद्धवा, विद्धवा व साई
भोटिया समाज में मृतक की आत्मा की शांति के हवन संस्कार किया जाता है।
ये प्रत्येक 12 वर्ष में कंडाली नामक उत्सव मनाते है

मनोरंजन ÷ तुबेरा (रसिया जैसा गीत), बाज्यू (वीर रस प्रधान गीत), तिमली (सामाजिक विषय पर गीत)
'हुड़के' इनका वाद्ययंत्र है
खेती के लिए 'कारिल विधि' प्रयोग करते है
जीबू (गाय की तरह एक जानवर)
भारत को सोने की चिड़िया कहलवाने में भोटांतिकों की भूमिका प्रशंसनीय रही है।
भोटियाओं में वस्तु विनिमय प्रणाली प्रचलित थी
भोटांतिक बोली में आभूषणों को 'साली-पुली' कहते है

भोटिया ÷ छाकू (भात को), 'छामा (दाल साग) तथा कूटे (रोटी) को कहते है।
लकड़ी के गहरे बर्तन को 'ढोम' कहते
भूमो, प्रस्यावोमो, बुनबी → संस्कार है तथा 'सभा कोमो' उत्सव मनाते है।
विपत्ति में भोटिया तिब्बती देवता व देवी फैला तथा धुरमा की पूजा करते है
एकाकी जीवन यापन करने के कारण भोटांतिको में रङ्वग (रङवंग) प्रथा थी
प्रत्येक भोटिया व्यापारी का तिब्बत में एक मध्यस्थ होता था जिसे 'मितुर' कहते थे। तथा इस मित्रता को स्थापित करने लिए एक रस्म सुलजी मूलजी आवश्यक थी

* जन्यो - सुपारी नामक वैवाहिक रस्म – थौका
* दामनारो विवाह प्रथा – जोहारी
* पम्पुली लोक नृत्य

जाड भोटियों का गांव – जादुंग (जनक ताल के पास) स्वयं को ये जनक का वंशज मानते है
जाड की बोलचाल की भाषा है - रोम्बा है। इनका प्रमुख त्यौहार लोहसर है (वर्ष का प्रथम दिन)
शौकाओं का वस्त्र (रङ्गा) महिलाएँ (चौगा) व कमर बन्ध (ज्यूज्यूड) पहनती है।